अध्ययन सामग्री ! -

विषय - हिन्दी

वर्ग - स्नातकोत्तर

सेमेस्टर - IV

प्रश्नपत्र - चार

सुमन कुमारी
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

'लेटी' भाग - IV

5) नाटककार प्रायः हल्के, ओछे-टुच्चे, हँसोड़, मसखरे, कामुक भावों का चित्रि चित्रण पसन्द करते हैं और प्रेक्षकों का एक वर्ग रंगशाला में ऐसे प्रसंगों को पसन्द भी करता है। नाट कार ऐसे प्रसंगों में उदात्त भावों से सर्व

DATE / /

दूर हो जाता है। इससे समाज में ओछे भावों का वर्चस्व बढ़ जाता है।

(च) काव्य या नाटक की अंतः प्रेरणा भावों के तीव्र आवेग से उत्पन्न होती है, तर्क से नहीं और तर्क न होने के कारण भावावेग हृदय से चालित होता है, बुद्धि से नहीं। बुद्धि और हृदय में, संतुलन के अभाव आ जाने से उदात्त भावों की सृष्टि नहीं हो पाती। फिर भावमूलक होने से कला भावों को ही उद्दीप्त कर पाती है, तर्क को नहीं। तब होता यही है कि काव्य मनोवेगों का पोषण एवं सिंचन करता है। इसी का दुष्परिणाम यह होता है कि काव्य सत्य और शिव से दूर हो जाता है।

इस प्रकार प्लेटो का काव्य नाटक, विषय विरोध साहित्यिकता और नैतिक प्रतीमानों से प्रेरित है। प्लेटो बार-बार इस बात की ओर संकेत करते हैं कि साहित्य में मनुष्य के नैतिक पक्ष के संबंध और सपुष्ट करने की सामर्थ्य होनी चाहिए। इस दृष्टि से वे नैतिकतावादी ही नहीं उपयोगितावादी भी हैं। उनकी दृष्टि में सुन्दर वही है जो सत्य और शिव से सम्पन्न है।

प्लेटो ने काव्य प्रकृति और काव्य सृजन प्रक्रिया के साथ काव्य प्रभाव पर भी

गहराई से विचार किया है। "रिपब्लिक" के दसवें अध्याय में एक ओर वो वे कविता के सत्य का निम्नतनस्तर का चित्र या वर्णन मानते हैं, वहीं दूसरी ओर वे कविता को आत्मा के अधम भाग से सम्बन्ध कर देते हैं. उनके विचार से मानव आत्मा की प्रकृति दोहरी होती है - प्रथम उत्तम भाग में बुद्धि और विवेक तथा दूसरे अधम भाग में शोक, क्रोध आदि मनोविकार। इसीलिए काव्य का प्रभाव आत्मा के निम्नस्तर से संबंधित होता है।

दार्शनिक प्लेटो को कविता के विरुद्ध केवल यही शिकायत नहीं थी कि वह आत्मा के असाधु वेश का पोषण करती है बल्कि कविता को लेकर सबसे बड़ी शिकायत यह थी कि वह हमारी वासनाओं को भी उत्तेजित करती है, उन्हें भड़काती है मनुष्य को अनियंत्रित बनाती है और आचरण भ्रष्ट प्राणी का रूप देती है। जबकि अच्छी कविता का काम हमारी हमारी वासनाओं को सुखाना है और संयमित करना चाहिए। चूंकि काव्य एक ऐसी शक्ति से सम्पन्न होता है जो मानव प्रकृति के हित के लिए घातक होती है। अतः प्लेटो कविता को अग्राह्य मानते हैं।

कितनी विचित्र बात है कि प्लेटो

DATE / /

दूर हो जाता है। इससे समाज में ओछे भावों का वर्चस्व बढ़ जाता है।

(1) काव्य या नाटक की अंतःप्रेरणा भावों के तीव्र आवेग से उत्पन्न होती है, तर्क से नहीं और तर्क न होने के कारण भावावेग हृदय से चालित होता है, बुद्धि से नहीं। बुद्धि और हृदय में संतुलन के अभाव आ जाने से उदात्त भावों की सृष्टि नहीं हो पाती। फिर भावमूलक होने से कला भावों को ही उद्दीप्त कर पाती है, तर्क को नहीं। तब होता यही है कि काव्य मनोवेगों का पोषण एवं सिंचन करता है। इसी का दुष्परिणाम यह होता है कि काव्य सत्य और शिव से दूर हो जाता है।